नाम	: Sample
लिंग	: स्त्री
जन्म तिथि	: 6 जूलाई,1989 गुरुवार
जन्म समय (Hr.Min.Sec)	: 09:10:00 am
समय मेखल (Hrs.Mins)	: 5.30 ग्रीनवीच रेखा के पूर्व
जन्म स्थल	: New Delhi
रेखांश : अक्षांश (Deg.Mins.Dir)	: 77.13 East , 28.38 North
अयनांश	: चित्रपक्ष
जन्म नक्षत्र - नक्षत्र पद	: **आशलेष** - 3
जन्म राशी - राशी का देव	: **कर्कट - चन्द्र**
लग्न - लग्न का देव	: सिंह - **सूर्य**
तिथि	: त्रितिया(शुक्लपक्ष)
करण	: हाथी
नित्ययोग	: वज्रा
सूर्योदय	: 05:29 am
सूर्योस्त	: 07:23 pm
दिनामान (Hrs.Mins)	: 13.54
सूर्य का राशी - नक्षत्र का स्थान	: मिथुन - पुर्नवासु
ठगड़ा राशी	: सिंह,मकर
ज्योतिष शास्त्र के अनुसार जन्म तिथि	: गुरुवार

गृहों का निरायन रेखांश

गृहों के निरायन रेखांश पर भारत के ज्यातिष शास्त्र की नीव डाली गई है। यह शयन रेखांश के मूल्य से (गुणांक से) अयनांश मूल्य को कम करने से प्राप्त होता है।

अयनांश की गणना अलग - अलग पद्धती से की जाती है। उनके प्रकार और आधार नीचे बताये गये है: चित्रपक्ष = 023:42:47

गृह	रेखांश डि : मि :से	राशी	राशी के रेखांश प्रकार डि : मि :से	नक्षत्र	पद
लग्न	126:48:05	सिंह	006:48:05	मघा	3
चन्द्र	116:10:25	कर्कट	026:10:25	आशलेष	3
सूर्य	080:20:48	मिथुन	020:20:48	पुर्नवासु	1
बुध	066:30:27	मिथुन	006:30:27	मृगशिरा	4
शुक्र	104:36:32	कर्कट	014:36:32	पुष्य	4
कुज	108:28:19	कर्कट	018:28:19	आशलेष	1
गुरु	060:56:04	मिथुन	000:56:04	मृगशिरा	3
शनि	256:38:29	धनुस	016:38:29	पूर्वषाढा	1
राहू	304:13:06	कुंभ्भ	004:13:06	धनिष्ठ	4
केतू	124:13:06	सिंह	004:13:06	मघा	2
गुलिक	139:14:15	सिंह	019:14:15	पूर्व फालगुनी	2

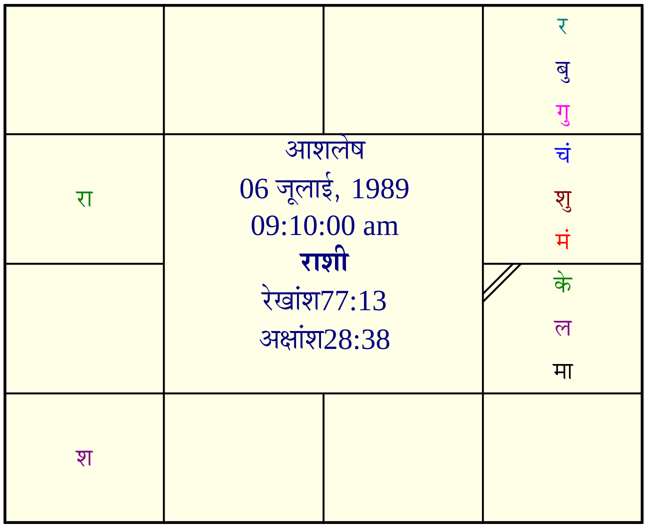

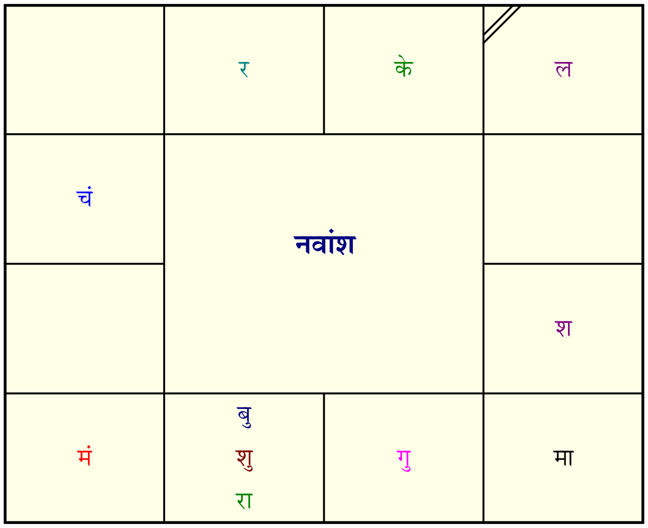

जन्म के समय दशा की समतुलना = बुध 4 साल, 10 महीने, 16 दिन

धन, भूमि और संम्पति

भूमि, सम्पति, धन, परिवार, बोली, भोजन आदि कुछ महत्वपूर्ण चीजे है जो दूसरी भाव द्वारा सूचित किया गया है ।

दूसरा भावाधिपति ग्यारहवें स्थान पर है। वैविध्यपूर्ण संपत्ति की प्राप्ति होगी। लोगों के बीच सम्मान और मान्यता प्राप्त होगी। बालावस्था में स्वास्थ्य में कमज़ोरी होगी। बाद में स्वास्थ्य में संपूर्ण आरोग्य प्रदान होगा। धन संचय और धनागमन आवश्यकतानुसार सदा होता रहेगा।

क्योंकि सूर्य और दूसरा देव एक ही भाव में है आप अपने बुद्दि और सम्पति को लोगे के लिए उपयोग करेगों ।

ऐसा देखा जाता है कि गुरु दूसरे देव से संयोग में है । आप पुराने ऐतिहासिक पुस्तकों पठना पसन्द करते है और अपने ज्ञान को दूसरों तक पहुँचाना चाहते है ।

क्योंकि दूसरा देव और पाँचवी देव संयोग में है आप संन्तानो से धन और सम्पति पा सकते है ।

क्योंकि दूसरा देव सातवी भाव से प्रभावित है आप संन्तानो से धन और सम्पति पा सकते है ।

संपत्ति, विध्या क्षेत्र इत्यादि के विषय में।

चतुर्थ भाव, चतुर्थेश कारक और संबन्धित ग्रहों की योग, युतिदृष्टि के माध्यम से संपत्ति विद्या-बुद्धि, माता, भूमि , भवन और वाहन आदि का सूचित करता है। इस पत्रिका में इस विषय का विवरण निम्नांकित है।

आपकी जन्म पत्रिका में चौथे भाव का स्वामी बारहवें स्थान पर रहने से बुद्धिशून्य कार्यों में पड़ने की संभावना है। इस कारण मानसिक तनाव और अस्वस्थता उत्पन्न हो सकती है। यह परिवार के बीच असंतोष उत्पन्न कर सकता है। स्त्री होने से किसी तरह की दुःखपूर्ण परिस्थिति निर्मित न हो इसका ध्यान करना लाभदायी होगा। माँ की याद बार बार सतायेगी। अचल संपत्ति का निर्माण होगा।

चौथे स्थान का मालिक मंगल है। आपके कार्यक्षेत्र में बुद्धि चातुर्य से महिला को सुशोभित करनेवाला व्यक्तित्व आप स्वयं प्रकट कर सकेगी। स्वाभिमान को तिलांजलि देकर समर्पण करना आपके लिए संभव नहीं होगी । जबकि समर्पण और सहयोग आपके मुख्य गुण होंगे। समर्पण व सहयोग महिलाओं के लिए आभूषण ही माने जाते हैं। तथ्यों का पूरी तरह चिंतन मनन करने के बाद ही उनका प्रायोगिक उपयोग करने वाली नारी हैं। हर काम में अग्रिम पंक्ति में रहने की इच्छुक हैं। अधिक अहंकार से बचें।

मानसिक शांति और तृप्ति के लिए आप धार्मिक विषयों का अध्ययन करना पसंद करते हैं। जिस किसी विषय में आप हाथ डालेंगे उसका पूरा ज्ञान पाए बिना पीछे न हटना आप का स्वभाव है। हर कार्य को बुद्धि की तराजू में तौलकर करने के आदि होंगे।

भाग्योदय, अनुभूतियाँ और पैत्रिक उपलब्धियों का विवरण।

नवमा भावाधिपति बारहवें स्थान पर है। निर्धन स्थिति का सूचक है। अति परिश्रमपूर्ण जीवन बितानी पड़ेगी। अपने निवास स्थान से कुछ समय तक दूर रहनी पड़ेगी। बहुत समय तक हर रोज़ श्रम करनी होगी। इन विपरीत संजोगों के होते हुए भी श्रेष्ठ मनोभाव और आत्मीयतापूर्ण जीवन बिताने वाली महिला हैं। पितृ संपत्ति की ज़्यादा अपेक्षा निराशा का कारण बन सकती है। जीवन की मूलभूत आवश्यकतायें पूरी होंगी, फिर भी उनमें कुछ विलंब की संभावना है। धैर्य के साथ जीवन में आगे बढ़ना ही पुरुषार्थ है और पति का सहयोग मिलता रहेगा।

नवमा भावाधिपति दुर्बल होने के कारण अनेक प्रतीक्षित सुखद अनुभवों से वंचित रहना पड़ेगा।

आमदनी

ग्यारहवी भाव आमदनी और आमदनी के मार्गे को सूचित करता है ।

ग्यारहवाँ भावाधिपति आय स्थान पर रहने से अपने कार्यक्षेत्र में सुशोभित रहेंगे। हर कदम पर प्रगति ही प्रगति होगी। सुख और विद्वता में आयु के साथ-साथ लगातार अभिवृद्धि होती रहेगी।

सूर्य ग्यारहवें स्थान पर रहा है। आपके मित्र आपके स्वाधीन शक्ति को उपयोग में लेंगे। आप संतोष और सामर्थ्य के समानता से मालिक बन पायेंगे। आपके पिताजी को अनेक क्लेशों का सामना करना पड़ेगा। आप दीर्घ आयु के हैं।

बुध ग्यारहवें स्थान पर रहा है। आप विश्वसनीय व्यक्ति हैं। आप ज्ञान संपन्न व्यक्ति भी हैं। योग्य श्रेष्ठ मित्रजन प्राप्त होंगे। क्रय-विक्रय कार्य से जीवन में सफलता प्राप्त होगी।

गुरु ग्यारहवें स्थान पर रहा है। वफादार मित्रजन की प्राप्ति होगी। यथायोग्य समय आने पर उन लोगों से मदद भी प्राप्त होगी। आप निर्भय और कीर्ति के पात्र हैं। आपका परिवार सीमित रहेगा।

ग्यारहवी देव और दूसरा देव अपने ही धर में उपस्थित है ।आप को धन और समापति पाने का अवसर है ।

रत्नधारण की सलाह

प्रत्येक वस्तु चाहे निर्जीव हो अथवा सजीव, धातु हो, द्रव्य हो या गैस हो उसका मानव शरीर की रक्त संचार व्यवस्था पर प्रभाव पड़ता है। शरीर की रक्त संचार प्रणाली ही मनुष्य के क्रिया कलाप, विचार शक्ति और उसकी उर्जा को प्रभावित करती है। शरीर का नियंत्रण और नियोजन करनेवाले इसी वैज्ञानिक सिद्धांत के कारण मनुष्य पर रत्नों का प्रभाव होता है। रत्न प्रकृति की अद्‌भुत रचना है। अनुसंधान द्वारा यह जाना गया है कि विशेष चयन विधी के द्वारा अगर रत्नों को धारण किया जाय तो जीवन में स्पष्ट और उल्लेखनीय परिवर्तन लाया जा सकता है।

रत्नों के विशेष गुण धर्म के अनुसार अपने साम्य ग्रहों की किरणों को अपने भीतर सोखते हैं और स्वाभाविक प्राकृतिक प्रक्रिया के कारण धारक के शरीर और मस्तिष्क को प्रभावित करते हैं।

रत्न क्रूर ग्रहों के कुप्रभाव को कम करते हैं और शुभ ग्रहों के शुभ प्रभाव के शुभत्व को बढ़ावा देते हैं।

षड्बल

	चन्द्र	सूर्य	बुध	शुक्र	कुज	गुरु	शनि
संपूर्ण षड्बल							
	378.08	460.29	497.50	369.97	315.87	461.79	358.90

संपूर्ण शडबल (रूप)						
06.30	07.67	08.29	06.17	05.26	07.70	05.98
मौलीक ज़रूरतें						
06.0	05.0	07.0	05.5	05.0	06.5	05.0
षडबल अनुपात						
1.05	1.53	1.18	1.12	1.05	1.18	1.20
संबन्धी स्थानक						
7	1	3	5	6	4	2

विश्लेषण

आपकी कुंडली में ग्रहों की शक्ति या प्रभाव का निर्णय षड्बला से किया गया है।

आपकी कूंडली में षड्बला प्रमाण १ से कोई भी ग्रह बलहीन नहीं है।

आपकी कुंडली में सबसे बलहीन ग्रह है चन्द्र

शुभ भावः

लग्नाधिपति है सूर्य
राशि का स्वामी है चन्द्र
पीड़ित है। अर्थात राशि के स्वामी पर कुदृष्टी है।
राशि पीड़ित है। अर्थात राशि पर कुदृष्टी है।
पाँचवें भाव का स्वामी है गुरु
पांचवा भाव पीड़ित है।
नवमे भाव का स्वामी है कुज

अशुभ भावः

छठा अधिपति शनि है ।
आठवी अधिपति गुरु है ।

विभिन्न भावों के अधिपति और शक्त गृहों के सूक्ष्म विश्लेषण के बाद ही रत्नों को चूना जाता है । एक जन्मकुण्डली के लिए लाभदायक रत्न को 'अनुकूल - गृह' सिस्टेम के आधार पर चुन लिया जाता है ।

रत्न धारण की सलाह

1.गृह : कुज
रत्न : मूंगा (Red Coral)
केरेट में वज़न : ७

रत्न को सोने की अंगूठी में जड़ें।
रत्न को बायाँ हाथ (Left Hand) पर अनामिका (Ring Finger) में पहनिए।
मंगलवार के दिन सूर्योदय के १५ मिनट पश्चात पहनिए।

मूंगा मंगल ग्रह को अपने पक्ष में करता है। यह कुंडली के विचार से मंगल के कुप्रभाव को कम करता है। यह एक गरम रत्न है।

रत्न धारण करने के पूर्व सावधानी / मौलिक तैयारियाँ

आज पहली बार जब आप रत्नों को धारण करनेवाले हैं तो यह अवसर खास प्रकार से महत्वपूर्ण माना जाता है। इस संदर्भ में मानसिक तैयारी और शुद्धता यानी स्वच्छता को महत्व देना अनिवार्य बन जाता है। इसलिए अपनी-अपनी धार्मिक मान्यता के अनुसार देव-दर्शन, पाठ पूजा, मंत्रजप इत्यादी करना उचित होगा। अपने माता-पिता, गुरु, देव-देवी इत्यादी के आशीर्वाद अत्यधिक लाभदायी रहेगा।

उपरोक्त प्रक्रियता के लिए उपयुक्त दिन चुना जाये। हर रत्नों के लिए एक निश्चित दिन श्रेष्ठ माना जाता है। उसके अनुसार ही दिनको चुनना उचित होगा। आवास स्थान के सूर्योदय समय को ध्यान में रखा जाये। यह केलेन्डर से प्राप्त होता है। सूर्योदय की जानकारी हिन्दुओं के 'पंचांग' से भी प्राप्त हो सकता है। तथां मन्दिरों से भी यह जाना जा सकता है। प्रभात के ब्रह्म मुहूर्त के समय उठ जाना उचित होगा। यह समय प्रभात के चार बजे से प्रारंभ होता है। सुबह के नित्य और नैसर्गिक कर्मों के बाद (स्नानादी कार्यों के पश्चात) साफ़-सुथरे कपड़े धारण करें। प्रार्थना या ईश्वर चिंतन के बाद मन को शाँत करें। ध्यान की प्रक्रिया इसके लिए युक्त मानी जाती है। अपने कार्यों को निश्चित रूप से किया जाये ताकि निर्धारित समय पर आप अमूल्य रत्न को धारण कर सकें। (जब भी हम पहली बार अमूल्य रत्न को धारण करते हैं तो यह उचित होगा कि यह कार्य अपने माँ-बाप, गुरु अथवा बुज़ुर्गों के सानिध्य में हो। उनका आशीर्वाद हमें सफलता प्रदान करता है।)

रत्न की गुणवता

रत्न किसी विश्वास योग्य स्थान से परख कर लें। रत्न को जिस धातु में धारण करने के लिए कहा गया है उसमें ही धारण करना उचित होगा। रत्न जड़ित अंगूठी अनुभवि सुनार से ही बनवायें। रत्न धारण करने का दिन और समय भी महत्वपूर्ण है। रत्न में 'प्राण-प्रतिष्ठा' करना अति आवशयक है। आप स्वयं साफ-सफाई और स्नान करके पूजा पाठ करके प्राण-प्रतिष्ठा कर सकते हैं। रत्न मे प्राण-प्रतिष्ठा करनी ही चाहिए। रत्न दर्शायी गयी तिथि तक ही धारण किया जाय।

चेतावनी / सावधानी

जिन रत्नों को धारण करने की सलाह प्राप्त होती है वह निश्चित काल के लिए होती है। आपकी जन्म पत्रिका में बताई गई दशा के बदलने से रत्न धारण की प्रक्रिया में परिवर्तन अनिवार्य बन जाता है। साथ-साथ जीवनकाल में आपकी समस्याओं में भी परिवर्तन होता रहता है। इस कारण निश्चित काल परिधी के बाद रत्न धारण की जानकारी करना अनिवार्य है।

ऐसा विश्वास किया जाता है कि अगर एक व्यक्ति रत्नो को अधिक समय तक पहने, तो उसका ज्योतिष युक्त परिहार शक्ति नष्ट हो जाता है । विविध रत्नों का समुचित कालावधि इस प्रकार है । मोती - २ वर्ष, माणिक - ४ वर्ष, मरकत मणि - ३ वर्ष, हीरा - ७ वर्ष, लाल मूँगा - ३ वर्ष, पीला मणि -४ वर्ष, नीलमणि - ५ वर्ष, गोमेदक - ३ वर्ष, लहसुनिया - ५ वर्ष । प्रस्तुत कालावधि के बाद नए रत्न से बना नया अँगूठी निर्देश किया गया है ।

कृपया ध्यान रहे आपकी अगली दशा 23-05-2021 पर परिवर्तित होगी।

Best Wishes,
Astro-Vision

DISCLAIMER: .

Although broadly based on Indian Predictive Astrology, we request you to consider this report as an independent work of Astro-Vision Futuretech Pvt. Ltd.ASTRO-VISION astrological calculations are based on scientific equations and not on any specific published almanac. Therefore, comparisons between the calculations made by ASTRO-VISION and those published in almanacs are absolutely unwarranted.Astro-Vision Futuretech Pvt. Ltd. shall not entertain any dispute on differences arising out of such comparisons. Astro-Vision Futuretech Pvt. Ltd. cannot be held responsible for the decisions that may be taken by anyone based on this report.While we ensure that each report is prepared meticulously and with utmost care, we do not rule out the possibility of any unexpected errors. In case of any errors our liability is limited to the replacement of the report with a rectified one. The software versions and the predictive text in the reports are subject to continuous modifications, including addition of new chapters. This is necessitated by the nature of the content and our constantly evolving research findings. We have adopted "Chitrapaksha ayanamsa" for all our calculations as it is the most popular and widely used ayanamsa system in India. The astrological calculations and predictions may differ in case a different ayanamsa is used. There are minor variations in the systems and practices followed by different regions of India and we have accommodated some of these variations in the regional language versions. As a result, the reports generated in different languages may not be exact translations. Also, all the language versions are not updated simultaneously.